प्रस्तावना

- अल्लाह तआला सारी दुनिया का पैदा करने वाला है।
- सारी दुनिया उसके अहकाम की पाबंद है, और उसकी मर्ज़ी व उसके हुक्म के मुताबिक़ हरकत करते हैं।
- अल्लाह ने इस दुनिया में इंसान को अपना ख़लीफ़ा बना कर पैदा किया है और उसे अमल की आज़ादी दी है।
- अमल की आज़ादी के साथ अल्लाह ने इस्लाम की सूरत में अपना पसंदीदा तरीक़ा-ए-ज़िन्दगी स्पष्ट कर दिया।
- इस्लाम नबियों के द्वारा दुनिया वालों पर वाज़ेह किया जाता रहा और आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) के द्वारा क़यामत तक के लिए आख़िरी शरीयत उतारी गई।
- इस तरह अल्लाह ने अमल की आज़ादी दे कर और अपनी पसंद बता कर इंसान के लिए एक 'इम्तेहान' तय कर दिया। जो इंसान अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ इस्लाम के तहत ज़िन्दगी गुज़ारेगा, वह कामयाब है वरना नाकाम है।
- इस्लाम सम्पूर्ण दीन तथा एक ऐसी जीवन व्यवस्था है जो ज़िन्दगी के सभी विभागों में मार्गदर्शन करती है। चाहें राजनीति हो या अर्थव्यवस्था, पारिवारिक जीवन हो या निजी गतिविधियां हर विभाग में इस्लाम का मार्गदर्शन मौजूद है।
- इस्लाम पर अमल का मतलब इसी सम्पूर्ण इस्लाम पर अमल है। चाहें वो व्यक्तिगत अमल हो या सामुदायिक अथवा सामाजिक।
- एक मुसलमान की ज़िम्मेदारी केवल इस्लाम पर अमल ही की नहीं है बल्कि सम्पूर्ण इस्लाम की स्थापना तथा इसे लागू करना भी एक कर्तव्य है।
- अर्थात एक मुसलमान की ज़िम्मेदारी यह है कि वह व्यक्तिगत रूप से इस्लाम पर पूर्णतः अमल करें। इस्लाम की दावत तथा प्रसार की कोशिश करे और जिन-जिन विभागों में इस्लाम सामन्यतः लागू नहीं है वहाँ उसे लागू करने का प्रयास करे।
- इस्लाम की स्थापना व उसे लागू करने की यह कोशिश एक दीर्घ अवधि तथा धैर्य के साथ संघर्ष चाहती है।
- इस जद्दोजहद के लिए छात्रों व नौजवानों को तैयार करना तथा उन्हें इस योग्य बनाना कि वह इसमें अपना महत्वपूर्ण किरदार अदा कर सकें जिसकी उम्मत-ए-मुस्लिमा व इस्लाम को सख़्त ज़रूरत है।
- SIO इसी जद्दोजहद के लिए क़ायम की गई है।
- SIO छात्रों व नौजवानों को इस्लाम की सही समझ प्रदान करती है तथा इस्लाम की उच्च शिक्षाओं से उन्हें अवगत कराती है।
- SIO छात्रों व नौजवानों को इस्लाम पर अमल करने के लिए आमादा करती है तथा वह माहौल देती है जो इस्लाम पर अमल करने में मददगार होता है।
- SIO छात्रों व नौजवानों को इस्लाम के प्रसार व उसकी दावत के काम के लिए तैयार करती है तथा इसके लिये आवश्यक अवसर व संसाधन तथा मार्गदर्शन उपलब्ध कराती है।
- SIO छात्रों व नौजवानों की प्रतिभाओं को विकसित करती है तथा उनकी तरबियत इस तरह करती है कि वह इस्लाम के लिए प्रभावी किरदार अदा करने के योग्य हो जाएं।
- SIO छात्रों व नौजवानों में ऐसी भावनाएँ एवं गुण पैदा करती है जो उन्हें अपनी ज़िम्मेदारी अदा करने के लिए सक्रिय रखें।
- SIO इस काम को विशेष रूप से छात्रों और शैक्षणिक संस्थानों में अंजाम देती है।
- SIO की इन तमाम सरगर्मियों एवं प्रयासों का उद्देश्य अल्लाह की रज़ा और आख़िरत में कामयाबी की प्राप्ति है।

मिशन:

ईश्वरीय मार्गदर्शन (इलाही हिदायात) के अनुसार समाज के नवनिर्माण के लिए छात्रों व युवाओं को तैयार करना।

उद्देश्य:

1. छात्रों एवं युवाओं को इस्लाम की दावत देना।
2. छात्रों एवं युवाओं में इस्लामी ज्ञान का प्रचार तथा दीन (इस्लाम) की चेतना जागृत करना है।
3. छात्रों एवं युवाओं को प्रेरित करना कि वे अपना व्यक्तिगत तथा सामूहिक जीवन क़ुरआन व सुन्नत के अनुसार ढालें।
4. छात्रों एवं युवाओं को भलाई (मारुफ़) के विकास तथा बुराइयों (मुनकर) की समाप्ति के लिए प्रेरित करना।
5. शिक्षा व्यवस्था में नैतिक मूल्यों तथा शिक्षण संस्थानों में उच्च नैतिक व शैक्षिक वातावरण को विकसित करना।
6. संगठन से जुड़े लोगों को बहुमुखी प्रशिक्षण देना, उनकी प्रतिभाओं को विकसित करना तथा उन्हें इस्लामी आंदोलन (तहरीक-ए-इस्लामी) के लिए लाभकारी बनाना।

राष्ट्रीय अध्यक्ष का संदेश

ब्रादरान-ए-अज़ीज़!

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह

अल्हम्दुलिल्लाह SIO ऑफ़ इण्डिया अपने सफ़र के साढ़े तीन दशक पूरे कर चुकी है। SIO अपने आग़ाज़ से ही छात्रों व नौजवानों को समाज के नवनिर्माण के लिए तैयार करने की ख़ातिर प्रयासरत है तथा किसी हद तक सफल भी। बहैसियत छात्र संगठन आवश्यकता इस बात की है कि हम छात्र बिरादरी में भाईचारे की भावना का प्रसार करें। हमें चाहिए कि इस वक़्त हक़ के पैग़ाम को छात्र व नौजवानों के सामने प्रस्तुत करें। ज्ञान वृद्धि, जागरूकता तथा एक्टिव सिविल सोसाइटी के इस दौर में SIO का मानना है कि छात्र शिक्षा तथा शैक्षणिक मुद्दों तक ही सीमित न रहें बल्कि समाज में होने वाले शोषण व अन्याय के ख़िलाफ़ भी उठ खड़े हों।

आज नफ़रत का बोलबाला है। आज इंसानी ज़िन्दगी, उसका सम्मान तथा उसकी आस्था संगठित षड्यंत्र का शिकार है। मानवीय अधिकारों के हनन के इस दौर में आंदोलन के एक कार्यकर्ता की हैसियत से हमें चाहिए कि शोषण व अन्याय के इस तूफ़ान के ख़िलाफ़ मज़बूत चट्टान बन कर खड़े हो जाएं। घृणा एवं हिंसा आज सामान्य सी बात हो गयी है, इस्लामोफ़ोबिया आम करने के संगठित प्रयास निरन्तर जारी हैं, ऐसा क्यों है? अरबी भाषा की लोकोक्ति है कि 'लोग उस चीज़ के दुश्मन होते हैं जिससे वे अनभिज्ञ होते हैं।" यह चिंताजनक रुझान लोगों में इसलिए पाया जाता है क्योंकि उनके पास इस्लाम का ज्ञान नहीं है, यदि है भी तो अत्यंत सीमित तथा भ्रांतियों पर आधारित है। हमारा प्राथमिक दायित्व है कि हम क़ुरआन का संदेश, उसके उच्च मानवीय मूल्य तथा उसके समानता एवं न्याय के सिद्धांत स्पष्ट रूप से उन लोगों के सामने प्रस्तुत करें।

"आगाह हो जाओ कि शरीर में मांस का एक लोथड़ा है,

जब वह सुधरा होता है तो पूरा शरीर सुधरा रहता है तथा जब वह भ्रष्ट होता है तो पूरा शरीर भ्रष्ट हो जाता है, कि वह दिल है।" (हदीस)

तज़्किया व तरबियत का अमल दिल से शुरू होता है। दिल ही हर परिवर्तन का स्रोत होता है। उसी की झलक व्यक्ति के किरदार, आमाल, रवैये, सम्बंध अर्थात जीवन के प्रत्येक विभाग में नज़र आती है। अतः तज़्किया की प्रत्येक अभ्यास में हमें इस बात को मद्देनज़र रखना चाहिए कि उससे दिल का सुधार हो रहा है या नहीं।

सूरह अल-बलद में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"क्या हमने उसे दो आंखें और एक ज़बान और दो होंठ नहीं दिए? और दोनों स्पष्ट रास्ते उसे (नहीं) दिखा दिए? किन्तु उसने दुर्गम घाटी से गुज़रने का साहस नहीं किया। और तुम क्या जानो कि वह दुर्गम घाटी क्या है? किसी गर्दन को ग़ुलामी से छुड़ाना अथवा फ़ाक़े के दिन किसी क़रीबी यतीम या मिस्कीन को खाना खिलाना। फिर उसके साथ यह कि आदमी उन लोगों में शामिल हो जो ईमान लाये और जिन्होंने एक दूसरे को सब्र और अल्लाह की मख़लूक़ात पर रहम करने की अपील की।"

इंशा अल्लाह, क़ुरआन के इस मार्गदर्शन पर अमल करते हुए, इस दुर्गम घाटी का सामना करेंगे।

वस्सलाम
आपका भाई
लबीद शाफ़ई
6 जमादि-उल-अव्वल 1440 हिजरी
13 जनवरी 2019

पॉलिसी ड्राफ़्ट

(जनवरी 2019 – दिसंबर 2020 कार्यकाल के लिए)

संगठन तज़्किया के सिलसिले में इज्तिमाई माहौल प्रदान करेगा और संगठन के कैडर अपने तज़्किया के लिए इस तरह लगातार प्रयास करते रहेंगे कि उनके दिल में पाकीज़गी, फ़िक्र में मज़बूती, अमल में निरंतरता और व्यक्तित्व में लाभकारी गुण पैदा हों।

सांकेतिक शब्द: तज़्किया, दिल में पाकीज़गी, फ़िक्र में मज़बूती, अमल में निरंतरता, व्यक्तित्व में लाभकारी गुण

व्याख्या: अल्लाह तआला और उसके रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से ताल्लुक़ का व्यक्ति की तरबियत और तज़्किया में महत्वपूर्ण किरदार है। अल्लाह तआला की रज़ा की उम्मीद और आख़िरत की पकड़ का खौफ़ ही इंसान को अमल की ओर उभारते हैं। इस सिलसिले में आत्मनिरीक्षण बहुत महत्वपूर्ण है और संगठन की सभी सरगरमियों का आधार तज़्किया है।

इज्तिमाईयत की यह ज़िम्मेदारी है कि वह व्यक्ति को तज़्किया के लिए उचित तथा प्रेरणास्रोत वातावरण उपलब्ध कराए। इस सिलसिले में वाबस्तगान के बीच मस्जिदों से गहरे ताल्लुक़ का मिज़ाज भी परवान चढ़ाया जाएगा। तज़्किया के सिलसिले में व्यक्तित्व के चहुमुखी विकास पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

एसआईओ छात्र व वाबस्तगान में वैचारिक दृढ़ता तथा शैक्षणिक विकास के लिए अध्ययन (Study) तथा ग़ौर-व-फ़िक्र के इज्तिमाई माहौल को विकसित करेगी।

सांकेतिक शब्द: अध्ययन, वैचारिक दृढ़ता, शैक्षणिक विकास

व्याख्या: अध्ययन (Study) व्यक्ति के मानसिक व बौद्धिक विकास का प्राथमिक स्रोत है। यह इल्म का दरवाज़ा है। दुनिया के मार्गदर्शन एवं नेतृत्व के लिए आंशिक जानकारी नहीं बल्कि गहन अध्ययन की आवश्यकता है। एसआईओ इस बात का प्रयास करेगी कि छात्र, विशेष रूप से वाबस्तगान में अध्ययन (Study) का रुझान विकसित हो, इल्म में गहराई और वैचारिक दृढ़ता पैदा हो तथा विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ तैयार हों। अध्ययन (Study) चाहें किताब का हो या ब्रह्मांड का हो, ग़ौर-ओ-फ़िक्र, गहन अध्ययन तथा आलोचनात्मक विश्लेषण इसके आधार हैं। इस परिप्रेक्ष्य में क़ुरआन व सीरत के अध्ययन की अहमियत सबसे ज़्यादा है। क़ुरआन से जुड़ाव तिलावत से शुरू होकर तदब्बुर और दावत-ए-क़ुरआन तक जारी रहती है, वहीं हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की सीरत के बार-बार अध्ययन तथा याददिहानी से मोमिनीन इल्मी व अमली जद्दोजहद के लिए जज़्बा हासिल करते हैं।

एसआईओ इस्लाम की दावत देश विशेष धार्मिक व सामाजिक परिदृश्य में इस तरह पेश करेगी कि इस्लामी विचारधारा की वास्तविकता स्पष्ट हो जाए और देशबंधु इस्लाम को अपनी बुनियादी ज़रूरत समझने लगें।

सांकेतिक शब्द: दावत, विशेष धार्मिक व सामाजिक परिदृश्य

व्याख्या: क़ुरआन मजीद में दावत-ए-दीन को उम्मत-ए-मुस्लिमा का फर्ज़-ए-मंसबी कहा गया है। नबियों की ज़िंदगियों को पढ़ने से मालूम होता है कि उनकी जद्दोजहद दावत-ए-दीन पर केन्द्रित थी। दीन की दावत पेश करते वक़्त देश के विशेष धार्मिक व सामाजिक परिदृश्य को मद्देनज़र रखते हुए इस्लामी विचारधारा की वास्तविकता स्पष्ट करना दीन का बुनियादी तक़ाज़ा है। इस बात पर भी विशेष तवज्जो हो कि हमारी दावती कोशिशों के नतीजे में देशबंधुओं को अपनी बुनियादी ज़रूरत, दुनियावी फ़लाह और आख़िरत की निजात का ज़रिया समझने लगें। इस परिप्रेक्ष्य में अमली जद्दोजहद के साथ-साथ शैक्षणिक व आनुसंधानिक (Educational & Research) कामों पर भी विशेष तवज्जो देने की आवश्यकता है।

SIO छात्रों व युवाओं में 'दाईयाना किरदार' को विकसित करने के लिए लगातार प्रयास करती रहेगी।

सांकेतिक शब्द: दाईयाना किरदार

व्याख्या: दावत-ए-दीन उम्मत-ए-मुस्लिमा का फ़र्ज़-ए-मंसबी है। यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम अपने कथनी-करनी से इस्लाम की सच्ची तस्वीर पेश करें। अतः तय किया गया है कि छात्रों व युवाओं में 'दाईयाना किरदार' को इस तरह बढ़ावा दिया जाएगा कि मिल्लत की सभी व्यक्तिगत व सामुदायिक गतिविधियों में दावती पहलू नुमायाँ हो। मिल्लत के लोग दावत-ए-दीन को अपनी ज़िम्मेदारी समझते हुए पूरे विश्वास, विनम्रता, बुद्धिमत्ता तथा शैक्षणिक तैयारी के साथ हर मोर्चे पर इस्लाम का प्रतिनिधित्व करें। इस परिप्रेक्ष्य में विशेष धार्मिक व सामाजिक परिदृश्य के अंतर्गत संक्षिप्त दावती वार्ता तथा बुद्धिमत्तापूर्ण दावती भाषा की तैयारी भी हमारे पेशेनज़र होगी।

SIO अपनी सरगर्मियों में विस्तार एवं मज़बूती पर समान रूप से ध्यान देगी ताकि छात्र बिरादरी में इसका संदेश आम हो, इसका प्रभाव दूर तक फैले तथा वाबस्तगान में सांगठनिक समझ, वैचारिक सामंजस्य तथा सम्पूर्ण एकाग्रता पैदा हो। इस परिप्रेक्ष्य में चयनित क्षेत्रों पर विशेष तवज्जो दी जाएगी।

सांकेतिक शब्द: विस्तार एवं मज़बूती, सांगठनिक समझ, वैचारिक सामंजस्य, सम्पूर्ण एकाग्रता।

व्याख्या: SIO का संदेश देश की छात्र बिरादरी में तेज़ी से आम हो और हमारी कोशिशें व्यवस्थित अंदाज़ में हों, इसके लिए संगठन विस्तार एवं मज़बूती पर समान रूप से तवज्जो देगा। यह भी आवश्यक है कि संगठन से जुड़े लोग देश के किसी भी भाग या क्षेत्र में हों, उनके बीच सांगठनिक समझ, वैचारिक सामंजस्य तथा एकाग्रता जागृत हो। जिन इलाक़ों में संगठन कमज़ोर हैं वहाँ इस परिप्रेक्ष्य में विशेष ध्यान दिया जाएगा।साथ ही संगठन के कार्यकर्ताओं को इस बात पर आमादा किया जाएगा कि वे संगठन की प्राथमिकताओं को मद्देनज़र रखें। प्रतिभावान तथा महत्वपूर्ण संस्थानों के छात्रों पर फ़ोकस करें और उन्हें अपने संगठन का हिस्सा बनाने की कोशिश करें।

SIO शिक्षा में सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष करेगी तथा शिक्षा को सर्वसुलभ एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए सरकारी नीतियों पर असरअन्दाज़ होगी।

सांकेतिक शब्द: शिक्षा, सामाजिक न्याय, सर्वसुलभ एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा।

व्याख्या: देश में आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्रों के साथ शिक्षा क्षेत्र में भी हमेशा से सामाजिक न्याय की जद्दोजहद की आवश्यकता रही है। शिक्षा क्षेत्र में देश के पिछड़े वर्गों के साथ शोषण व अन्याय, उच्च शिक्षा से दूर रखने की कोशिश, मातृभाषा में शिक्षा के अवसरों को समाप्त करना, समान एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के अवसरों से दूर रखने के प्रत्यक्ष प्रयास आज भी जारी हैं। एक बेहतर समाज के निर्माण के लिए इन समस्याओं के हल के प्रयास हमारी जद्दोजहद का हिस्सा होना चाहिए। इसी प्रकार नैतिकता एवं आधारभूत मूल्य पर इस शिक्षा व्यवस्था के लिए ध्यान योग्य नहीं समझे जाते। यही कारण है कि अश्लीलता, नग्नता तथा बेहयाई न केवल छात्रों तथा शैक्षणिक संस्थानों में बल्कि आधिकारिक रूप से शैक्षिक पाठ्यक्रम में भी शामिल किए जा रहे हैं। शैक्षिक पाठ्यक्रम के द्वारा घृणा फैलाने के संगठित प्रयास भी जारी हैं जिनको संज्ञान में लाया जाना आवश्यक है। इन सभी पहलुओं को सामने रखते हुए SIO देश की शिक्षा नीतियों और एजेंडा पर असरअंदाज़ होने की कोशिश करेगी।

SIO समस्याओं से वैचारिक रूप से रूबरू होगी। इस सिलसिले में अकेडमिक एक्टिविज़्म पर विशेष तवज्जो दी जाएगी।

सांकेतिक शब्द: अकेडमिक एक्टिविज़्म, समस्याएं।

व्याख्या: SIO विभिन्न समस्याओं पर छात्र बिरादरी के बीच काम करती रही है। मुद्दों पर आवाज़ उठाना ही उद्देश्य नहीं है बल्कि राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षणिक तथा आर्थिक समस्याओं को उठाने और उन्हें हल करने के दौरान अपनी वैचारिक पहचान को बरक़रार रखना भी बेहद आवश्यक है। मुद्दों के चयन से लेकर उन्हें हल करने के तौर-तरीक़ों तक प्रत्येक चरण में अपने व्यक्तित्व की छाप छोड़ना ज़रूरी है। SIO मूल्यों को परवान चढ़ाना चाहती है। इस परिप्रेक्ष्य में कोशिश की जाएगी कि संगठन में अकेडमिक एक्टिविज़्म को बढ़ावा दिया जाए ताकि मुद्दों के हल की ठोस ज्ञानवर्धक आधार और उन्हें शैक्षणिक स्तर पर समझा व समझाया जा सके।

एसआईओ कैंपस में लोकतान्त्रिक वातावरण को बनाने की कोशिश करेगी। इस सिलसिले में अन्य इंसाफ़ पसंद संगठनों के साथ मिलकर साझा संघर्ष करने के प्रयास किए जाएंगे।

सांकेतिक शब्द: कैंपस, लोकतान्त्रिक वातावरण, साझा संघर्ष।

व्याख्या: देश के कैम्पसों में लोकतान्त्रिक वातावरण का अभाव है, जहाँ सामान्यतः छात्र राजनीति तथा चुनाव के लिए अवसर नहीं होते अथवा सीमित होते हैं। एसआईओ का यह मानना है कि सभी कैम्पसों में लोकतान्त्रिक वातावरण क़ायम रहे तथा प्रत्येक को अभिव्यक्ति की आज़ादी मिले। इस संबंध में एसआईओ कैम्पसों में लोकतान्त्रिक वातावरण को बनाने और क़ायम रखने के लिए प्रयास करती रहेगी तथा कैंपस में मौजूद अन्य इंसाफ़ पसंद संगठनों को साथ लेकर साझा संघर्ष भी करेगी।

SIO कैम्पस में मौजूद डिस्कोर्स (संवाद) पर प्रभावी होने का प्रयास करेगी तथा कैम्पस एक्टिविज़्म में न्याय एवं समानता की 'क़ुरआनी अवधारणा' प्रस्तुत करेगी।

सांकेतिक शब्द: कैम्पस एक्टिविज़्म, डिस्कोर्स (संवाद) , न्याय एवं समानता, क़ुरआनी अवधारणा

व्याख्या: कैम्पस में विभिन्न मुद्दों को सरसरी तौर उठाने से क्षणिक लाभ तो हो सकता है लेकिन उससे कोई स्थायी तथा ठोस काम तब तक अंजाम नहीं दिया जा सकता जब तक कि कैम्पस के मुद्दों पर अपने वैचारिक पक्ष को स्पष्ट न किया जाए। SIO कैम्पस के डिस्कोर्स (संवाद) की पहचान, उस पर अपना पक्ष स्पष्ट करना तथा अपने संदेश के द्वारा छात्र बिरादरी में पैठ बनाने की कोशिश करेगी तथा अपनी प्राथमिकताओं के अनुसार विभिन्न मुद्दों को कैम्पस का 'डोमिनेंट डिस्कोर्स (प्रभावी संवाद)' बनाना भी संगठन के मद्देनज़र रहेगा।

कैम्पस में अपनी जद्दोजहद के दौरान सामाजिक न्याय के क़ुरआनी अवधारणा को प्रस्तुत करेगी तथा इसके लिए दरकार शैक्षणिक एवं वैचारिक तैयारी व वैकल्पिक इस्लामी डायलॉग की तैयारी पर विशेष तवज्जो दी जाएगी।

SIO मदरसा छात्रों पर विशेष तवज्जो देगी, उनको समाज व सामाजिक मुद्दों से जोड़ने तथा उनकी प्रतिभाओं को निखारने की कोशिश करेगी।

सांकेतिक शब्द: मदरसा छात्र, समाज व सामाजिक मुद्दे, प्रतिभाओं का विकास

व्याख्या: दीनी मदारिस मिल्लत-ए-इस्लामिया हिन्द के इतिहास का एक उज्ज्वल अध्याय हैं। मदरसों के छात्र मिल्लत की अनमोल धरोहर हैं। मदरसों के छात्र विभिन्न सामाजिक व शैक्षिक समस्याओं के बावजूद अपनी प्रतिभाओं से देश व मिल्लत के निर्माण व विकास में महत्वपूर्ण किरदार अदा कर सकते हैं। संगठन की प्राथमिकता होगी कि मदरसा छात्रों की प्रातिभाओं को बढ़ावा दिया जाए, उन्हें समाज व सामाजिक मुद्दों से जोड़ा जाए ताकि वे देश व मिल्लत के निर्माण में अपना वांछनीय किरदार अदा कर सकें।

SIO धार्मिक अल्पसंख्यकों तथा पिछड़े वर्गों पर होने वाली हिंसा तथा पक्षपात के विरुद्ध साझा संघर्ष करेगी।

सांकेतिक शब्द: धार्मिक अल्पसंख्यक, पिछड़े वर्ग, साझा संघर्ष

व्याख्या: विगत कई वर्षों से देश में मानवाधिकारों का उल्लंघन, इस्लामोफ़ोबिया के द्वारा ख़ौफ़ व मायूसी का वातावरण बनाने तथा शैक्षिक व सामाजिक स्तरों पर मुसलमानों व अन्य शोषित व पिछड़े वर्गों को निम्न स्तर पर धकेलने के निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं। अल्पसंख्यकों पर हिंसा की घटनाएं, Extra-Judicial Killing, फ़र्ज़ी मुक़दमे, झूठे आरोप तथा बेगुनाही के बावजूद वर्षों की जेल अब सामान्य बात हो गयी है। दअरसल ये सारी घटनाएं, विशेष रूप से अल्पसंख्यकों पर होने वाली हिंसा महज़ कोई हादसा नहीं बल्कि योजनाबद्ध तथा संगठित प्रयासों का परिणाम है। इन परिस्थितियों के शिकार सामान्यतः छात्र एवं नौजवान हो रहे हैं अतः यह आवश्यक है कि उनके बीच जागरूकता फैलाई जाए तथा उन्हें इसके ख़िलाफ़ संघर्ष के लिए आमादा किया जाए ताकि देश में न्याय एवं शांति का वातावरण विकसित हो सके। इस परिपेक्ष्य में आवश्यक है कि दस्तावेज़ों को सुरक्षित करने का काम किया जाए तथा मानवाधिकारों के संस्थानों (जैसे NHRC, अल्पसंख्यक आयोग तथा SC/ST आयोग आदि) का भरपूर इस्तेमाल किया जाए। इसके अतिरिक्त वर्तमान कानूनों का एक आलोचनात्मक विश्लेषण तथा उनकी कमियों को पूरा करने के लिए मांगें रखना वक़्त की अहम ज़रूरत है। संगठन न केवल ख़ुद बल्कि अमनपसंद संगठनों को भी "भलाई के मामले में तुम एक दूसरे के मददगार बनो" के क़ुरआनी सिद्धांत के अंतर्गत जद्दोजहद में साथ लेगी।

SIO छात्रों व नौजवानों में एंटरप्रेन्योरशिप को बढ़ावा देगी।

सांकेतिक शब्द: एंटरप्रेन्योरशिप

व्याख्या: एंटरप्रेन्योरशिप (अर्थात नए व अछूते विचारों पर आधारित व्यक्तिगत कारोबार) के द्वारा आज़ादी व आत्मनिर्भरता, मेहनत तथा जोखिम लेने का जज़्बा परवान चढ़ता है। ये लोग जहाँ दूसरों के आगे हाथ फैलाने से बच जाते हैं वहीं दूसरों के लिए भलाई का स्रोत बनते हैं। नबी (सल्ल.) ने भी सहाबा के दरम्यान इस रूझान को बढ़ावा दिया था।

शिक्षित नौजवान तथा विभिन्न क्षेत्रों के माहिर छात्र जॉब तलाश करने के समानांतर नए व्यापारिक संस्थानों तथा उससे सम्बन्धित सेवाओं को अंजाम देने के लिए प्रयत्नशील हों तो 1. आत्मनिर्भरता, 2. अन्य लोगों के लिए रोज़गार प्रदान करना तथा 3. उम्मत-ए-मुस्लिमा में आर्थिक सुदृढ़ीकरण में महत्वपूर्ण किरदार अदा कर सकते हैं। ऐसे नौजवानों का अपना एक विशेष प्रभावशाली दायरा होता है, सामाजिक व राजनीतिक दबाव बना सकते हैं तथा इस्लाम की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संसाधन प्रदान कर सकते हैं। भारत सरकार की विभिन्न मंत्रालय व उम्मत के कई संस्थान इस मामले में आवश्यक जानकारी, प्रतिभाओं का विकास, तकनीकी प्रशिक्षण, काउंसिलिंग व संसाधन आदि प्रदान करते हैं, उनसे भरपूर लाभ उठाया जाना चाहिए।

SIO इस्लामी सिद्धांतों के अनुसार पर्यावरण सुरक्षा के लिए छात्र व नौजवानों में संवेदनशीलता पैदा करेगी।

सांकेतिक शब्द: पर्यावरण सुरक्षा, इस्लामी सिद्धांत, संवेदनशीलता

व्याख्या: प्राकृतिक वातावरण तथा संसाधनों के ग़लत उपयोग के परिणामस्वरूप पैदा होने वाले पर्यावरण संकट विश्व भर में एक संगीन मुद्दा बन गया है। यह समस्या महज़ पर्यावरण संकट नहीं है बल्कि एक जटिल समस्या है जिसमें वैचारिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा स्वास्थ्य से सम्बंधित पहलू शामिल हैं। इस्लाम की "इमारतुल-अर्ज़" अवधारणा की रहनुमाई में SIO छात्रों व नौजवानों में छात्र एवं नौजवानों में संवेदनशीलता पैदा करेगी और व्याप्त विकास मॉडलों का इस्लामी सिद्धांतों पर आधारित विवरण तैयार करेगी। SIO अपने कैडर में 'नागरिक भावना (Civic Sense)' को भी बढ़ावा देगी। आवश्यकता पड़ने पर अन्य संगठनों व व्यक्तियों में साझा संघर्ष भी करेगी।

जूनियर एसोसिएट की मानसिकता का लिहाज़ रखते हुए उनकी तरबियत इस तरह की जाएगी कि उनमें इस्लाम की मुहब्बत पैदा हो, अख़लाक़ में बेहतरी आए, प्रतिभाओं का विकास हो तथा संगठन से जुड़ने का जज़्बा पैदा हो। इस परिप्रेक्ष्य में विषयवस्तु की तैयारी पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

सांकेतिक शब्द: जूनियर एसोसिएट, मानसिकता, इस्लाम की मुहब्बत, अख़लाक़ में बेहतरी, प्रतिभाओं का विकास, संगठन से जुड़ाव, विषयवस्तु की तैयारी।

व्याख्या: 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों की तरबियत व उनकी प्रतिभाओं का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस सिलसिले में सभी प्रांत एवं यूनिटें इस बात पर तवज्जो देंगें कि मुहल्ले व स्कूलों में अंजाम दिए जाने वाले प्रोग्राम जूनियर एसोसिएट की आयु, मिज़ाज, मानसिकता तथा प्राकृतिक आवश्यकताओं के अनुसार हों। इन सरगर्मियों के द्वारा उनके अंदर दीन-ए-इस्लाम से अथाह प्रेम का जज़्बा परवान चढ़े, अख़लाक़ व किरदार बेहतर से बेहतर हों, सृजनात्मकता विकसित हो, प्रतिभाएं परवान चढ़ें तथा शिक्षा का स्तर बुलंद हो। आधुनिक युग में ज़ेहनसाज़ी के लिए सांस्कृतिक आयोजन बहुत प्रभावी किरदार अदा कर रहे हैं। इस्लाम पसन्द हलक़ों के लिए भी आवश्यक है कि वो बच्चों की तरबियत में इस ओर भी तवज्जो दें। इस परिप्रेक्ष्य में विश्व भर में मौजूद विषयवस्तु को उपलब्ध कराना, नई विषयवस्तु की तैयारी तथा उसका वितरण भी संगठन के मद्देनज़र होगी। जूनियर एसोसिएट के SIO में शामिल होने के सिलसिले में भी शऊरी व विशेष तवज्जो की आवश्यकता है।

प्रोग्राम व गाइडलाइंस

तज़्किया व तरबियत:

- केंद्रीय स्तर पर ZAC के लिए तरबियती प्रोग्राम आयोजित किये जायेंगे।
- प्रत्येक मेम्बर इस कार्यकाल में 'तफ़हीमुल-क़ुरआन' का अध्ययन करेगा।
- इनफ़ाक़ सप्ताह मनाया जाएगा।
- केंद्रीय स्तर पर अरबी भाषा सिखाने का कोर्स शुरू किया जाएगा।
- मक़ामी सतह पर निज़ामुल-उसरा क़ायम किया जाएगा।
- सभी प्रांत "स्टडी ZAC" का आयोजन करेंगे।
- प्रत्येक मेम्बर तज़्किया के इन्हीं आधारों पर अपने व्यक्तिगत विकास तथा एहतिसाब के लिए प्लान तैयार करेगा।

दावत:

- केंद्रीय स्तर पर दावती मुहिम मनाई जाएगी।
- दावती पहलू से एक कॉन्फ्रेंस या सेमिनार का आयोजन किया जाएगा।
- सभी ज़ोन कैंपस स्टूडेंट्स के लिए "इस्लाम परिचय" कोर्स तैयार करके उसे अमल में लाने की कोशिश करेंगे।

संगठन:

- केंद्रीय स्तर पर SMC का आयोजन किया जाएगा।
- केंद्रीय स्तर पर पर्यावरण पर 'National Orientation Program' आयोजित किया जाएगा।
- 'स्टार्टअप इनक्यूबेटर' को केंद्रीय स्तर पर स्थापित किया जाएगा।
- सभी ज़ोन एंटरप्रेन्योरशिप पर प्रोग्राम आयोजित करेंगे।
- कल्चरल एक्टिविज़्म पर एक 'Orientation Program' आयोजित किया जाएगा। (फ़िल्म व लिट्रेचर)
- नॉर्थ-ईस्ट कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया जाएगा।
- ZP/ZS सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा।
- National Review Meets का आयोजन किया जाएगा
- ऑल इंडिया ZAC का आयोजन किया जाएगा।

दीनी मदारिस:

- ट्रांसलेशन क्लब को जारी रखा जाएगा।
- दीनी मदारिस मेम्बर्स कैम्प का आयोजन किया जाएगा।
- सभी ज़ोन दीनी मदारिस पर विशेष तवज्जो देने के लिए ज़ोनल स्तर पर एक इंचार्ज को नियुक्त करेंगे।
- सभी ज़ोन "राज्यस्तरीय इस्लामिक कैंपस फ़ेस्टिवल" का आयोजन करेंगे।

शिक्षा:

- चयनित प्रान्तों में 'हिस्ट्री समिट' का आयोजन किया जाएगा।
- रिसर्च स्कॉलर समिट का आयोजन किया जाएगा।
- ज़ोन 'State Education Movement' के द्वारा प्रांतों के शैक्षिक मुद्दों को हल करने का प्रयास करेंगे, मरकज़ इस मामले में मार्गदर्शन करेगा।

कैंपस:

- केंद्रीय विश्वविद्यालय व 'Institute of National Importance' जैसे संस्थानों में वाबस्तगान के दाख़िले तथा कैम्पस एक्टिविज़्म की समझ पैदा करने के लिए ज़ोन, मरकज़ के मार्गदर्शन में काम करेंगे। (विश्वविद्यालय विज़िट, काउंसिलिंग, मेंटरशिप प्रोग्राम आदि)
- SIO स्टूडेंट्स यूनियन के चुनाव में भाग लेगी।

जनसम्पर्क:

- केंद्रीय स्तर पर लीगल सेल स्थापित किया जाएगा।
- चयनित मानवाधिकार साधनों पर ट्रेनिंग दी जाएगी।

जूनियर एसोसिएट सर्किल:

- जूनियर एसोसिएट्स के लिए ज़ोन और यूनिट्स गाइड्स/वीडियोज़/कविताएं/ई-बुक्स/ई-मैगजीन्स आदि की शक्ल में तैयारशुदा मटीरियल आपस में शेयर करें।

संगठन के निम्नलिखित पॉइंट्स पर अपनी और अन्य मुस्लिम छात्रों व नौजवानों की ज़िंदगी को सँवारने की कोशिश करेंगे:

- बुनियादी अक़ायद की गहरी समझ और उस पर पुख़्ता यक़ीन।
- दिल के जज़्बात (फ़िक्र-ए-आख़िरत, तक़वा, तवक्कुल, सब्र व इस्तिक़ामत, क़ुरबानी, अल्लाह से मुहब्बत, मुहब्बत-ए-रसूल और इन्सानों के लिए जज़्बा-ए-मुहब्बत व हमदर्दी आदि) को परवान चढ़ाएँ।
- इस्लामी मक़ासिद के लिए इज्तिमाइयत से दिली ताल्लुक़ पैदा करना।
- ज्ञान के इस्लामी नुक़्ता-ए-नज़र को समझना।
- फ़िक्र के तमाम जाहिली और माद्दापरस्ती के प्रभावों (करियरिज़्म, कंज़्यूमरिज़्म आदि) से पाक करना।
- क़ुरआन से गहरा ताल्लुक़ पैदा करना।
- अपना जायज़ा व एहतिसाब करना।
- ज़िंदगी को सभी बुराइयों से पाक करना।
- बेहयाई और अश्लीलता से परहेज़।
- ज़िंदगी को इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार ढालना।
- फ़र्ज़ व नफ़्ल नमाज़ों, दुआ, ज़िक्र तथा इस्तिग़फ़ार का एहतिमाम करना।
- तिलावत और क़ुरआन के अध्ययन का एहतिमाम करना।
- नेक सोहबत इख़्तियार करना।
- मस्जिद से ताल्लुक़ मज़बूत करना।
- राह-ए-ख़ुदा में वक़्त, सलाहियत और माल ख़र्च करना।
- दावती जद्दोजहद करना।
- प्रतिभाओं को सही दिशा में विकसित करना।
- सफ़ाई और सलीक़ामंदी का लिहाज़ रखना।